PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Jansatta, Delhi
Tue, 06 Jun 2017, Page 1
Width: 22.01 cms, Height: 37.59 cms, a3, Ref: 16.2017-06-06.15

सबसे भारी रॉकेट से हुआ जीसैट 19 का सफल प्रक्षेपण

श्रीहरिकोटा, 5 जून (भाषा)।

भारत ने संचार उपग्रह जीसैट-19 को ले जाने वाले सबसे अधिक वजनी रॉकेट जीएसएलवी एमके-तृतीय-डी1 का सोमवार को सफलतापूर्वक प्रक्षेपण कर इतिहास में अपना नाम दर्ज कर लिया। इस ऐतिहासिक सफलता पर राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने इसरो को बधाई दी है।

यहां सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र पर दूसरे लांच पैड से शाम पांच बजकर 28 मिनट पर 43.43 मीटर लंबे रॉकेट का प्रक्षेपण किया गया। इसने देश के अब तक के सबसे अधिक 3,136 किलोग्राम वजन वाले जीसैट-19 उपग्रह को करीब 16 मिनट बाद अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित कर दिया। इस सफलता के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चेयरमैन एएस किरण कुमार ने कहा, 'यह ऐतिहासिक दिन है।' उन्होंने कहा कि भू स्थिर उपग्रह प्रक्षेपण यान मार्क तृतीय (एमके तृतीय डी-1) ने जीसैट-19 को लक्षित कक्षा में स्थापित कर अपनी क्षमताओं का सफलतापूर्वक

बाकी पेज 8 पर

PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Jansatta, Delhi
Tue, 06 Jun 2017, Page 1
Width: 53.51 cms, Height: 29.29 cms, a3r, Ref: 16.2017-06-06.15

सबसे भारी रॉकेट से हुआ जीसैट 19 का सफल प्रक्षेपण

पेज 1 का बाकी

प्रदर्शन किया।' कुमार ने कहा, 'पहले प्रयास में यह बड़ी सफलता है। जीएसएलवी एमके तृतीय ने अगली पीढ़ी के उपग्रह जीसैट–19 को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित कर दिया।' उन्होंने कहा, 'मैं पूरी टीम को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने 2002 से लेकर आज के इस प्रक्षेपण के लिए हर दिन लगातार काम किया।'

जीसैट–19 को भूस्थैतिक कक्षा में स्थापित किया गया। इससे भारत के संचार संसाधनों में वृद्धि होगी। जीएसएलवी मिशन भारत के लिए काफी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अब तक 2,300 किलो से ज्यादा वजन वाले संचार उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए इसरो को विदेशी प्रक्षेपकों पर निर्भर रहना पड़ता था। जीएसएलवी एमके3–डी1 भूस्थैतिक कक्षा में 4000 किलो तक के और पृथ्वी की निचली कक्षा में 10,000 किलो तक के पेलोड या उपग्रह ले जाने की क्षमता रखता है। यह प्रक्षेपण पूरी तरह से सफल है क्योंकि स्वदेश निर्मित क्रायोजेनिक इंजन के साथ तीन चरण वाले जीएसएलवी एमके तृतीय के प्रत्येक चरण का प्रदर्शन वैसा ही रहा जैसी योजना बनाई गई थी।

इस अवसर को ऐतिहासिक क्षण करार देते हुए राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन को स्वदेशी आधार पर विकसित जीएसएलवी मार्क तीन से जीएसएटी–19 के सफल प्रक्षेपण के लिए बधाई दी। राष्ट्रपति ने अंतरिक्ष विभाग के सचिव, अंतरिक्ष आयोग और इसरो के अध्यक्ष एस किरण कुमार को भेजे संदेश में कहा, 'जीएसएलवी मार्क तीन भारत की ओर से अभी तक बनाया गया सबसे वजनी राकेट है। यह आज की तारीख तक बने सबसे भारी उपग्रहों को ले जाने में सक्षम है। राष्ट्र इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के कारण गौरवान्वित है।' उन्होंने कहा, 'कृपया वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, प्रौद्योगिकीविदों के अपने दल और इस अभियान से जुड़े सभी अन्य सहयोगियो को मेरी शुभकामनाएं दीजिएगा। मेरी कामना है कि इसरो आने वाले सालों में इस सफलता को बरकरार रखेगा।'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सफल प्रक्षेपण की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह भारत को अगली पीढ़ी के उपग्रह की क्षमता के नजदीक ले जाता है। किरण कुमार ने बताया कि प्रधानमंत्री ने उन्हें फोन कर सफल अभियान के लिए इसरो टीम के प्रत्येक सदस्य को बधाई दी। मोदी ने अंतरिक्ष विभाग के सचिव से बात की और सफल प्रक्षेपण के लिए उन्हें और उनके दल को बधाई दी। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने भी इस उपलब्धि के लिए इसरो को बधाई दी है। उन्होंने एक संदेश में कहा कि यह एक अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इसरो ने अंतरिक्ष विज्ञान में अपनी दक्षता की परंपरा को कायम रखा है। सोनिया ने कहा कि इसरो के अध्यक्ष किरण कुमार और उनके दल ने राष्ट्र को एकबार फिर गौरवान्वित किया है।